म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद जनसाधारण में विज्ञान का प्रचार प्रसार तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से उनके जीवन के सामाजिक एवं आर्थिक स्तर को बेहतर बनाने की दिशा में प्रयासरत है। सन् 1958 में संसद द्वारा अनुमोदित वैज्ञानिक नीति तथा वर्ष 1981 में बैंगलोर में आयोजित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषदों की कार्यशाला में की गई अनुशंसाओं के आधार पर राज्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए नवम्बर 1981 में म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद की स्थापना की गई। परिषद के सर्वोच्च अधिकारी (विभागाध्यक्ष) महानिदेशक हैं। राज्य शासन के दिनॉक 9 अगस्त 1986 के आदेशानुसार महानिदेशक, म.प्र. शासन के पदेन वैज्ञानिक एवं तकनीकी सलाहकार भी हैं । वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था में महानिदेशक ही विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के प्रमुख सचिव भी हैं।

म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद की स्थापना निम्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु की गई हैः–

1. राज्य के गरीब एवं पिछड़े कृषक, भूमिहीन कृषक, छोटे कृषक, छोटे कामगार एवं अनुसूचित जाति/जनजाति, महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान के लिए विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी दूर करने के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों की पहचान करना तथा उनके विकास के लिए उसका उपयोग करना।
2. सामाजिक एवं आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शासन की नीतियों एवं उनके परिपालन हेतु उठाये जाने वाले आवश्यक कदमों के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग के बारे में शासन को सलाह देना ।
3. राज्य के प्राकृतिक संसाधनों के समन्वित विकास के लिए अनुसंधान एवं प्रदर्शन तथा विकासीय योजनाओं, कार्यक्रमों की पहल, प्रयोजन एवं समन्वय करना ।
4. विकास को बढ़ावा देने हेतु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की आवश्यकता अनुसार प्रयोगशालाएँ स्थापित करना अथवा उनकी स्थापना हेतु सहायता देना ।
5. पुस्तकालय एवं प्रलेखन केन्द्र की स्थापना एवं संचालन करना ।
6. राज्य के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की अन्य संस्थाओं से प्राप्त होने वाली योजनाओं का अनुमोदन, योजनाएँ तैयार करना एवं उनकी तैयारी हेतु अनुदान, ऋण एवं विशेषज्ञों को सहायता प्रदान करना ।
7. विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए जनसामान्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रचार एवं प्रसार तथा संगोष्ठियों का आयोजन करना ।
8. राज्य शासन द्वारा परिचालित तकनीकी प्रयासों में परिपूरक बनना।
9. समान उद्देश्यों की राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थाओं के साथ परस्पर कार्य करना ।
10. राज्य की समस्याओं के निराकरण के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी से संबंधित कार्यवाही तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की शिक्षा को बढ़ावा देना।
11. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय अनुसंधान एवं विकास कार्यों को पुरस्कृत करना।
12. सामान्यतया समस्त ऐसे उपाय करना, जिसमें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग से म.प्र. का आधुनिकीकरण तीव्रता से हो।

राज्य की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु परिषद को नोडल एजेन्सी के रूप में मान्यता प्राप्त है। परिषद ने हाल ही में कई क्षेत्रों में विशेषज्ञता हासिल कर ली है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित जानकारियों एवं कार्यक्रम इसके विभिन्न केन्द्रों द्वारा संचालित किये जाते हैं। ये केन्द्र है– सुदूर संवेदन उपयोगिता केन्द्र, जैव प्रौद्योगिकी उपयोगिता केन्द्र, पेटेंट सूचना केन्द्र, औषधीय एवं सुगंधित पौध केन्द्र, केन्द्रीय प्रयोगशाला सुविधा, पुस्तकालय–सह–प्रलेखन केन्द्र, सामाजिक कार्यक्रम, विज्ञान लोकव्यापीकरण एवं औद्योगिकी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र। परिषद के पास विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न विषय क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्राप्त एवं समर्पित युवा वैज्ञानिकों की टीम है। परिषद विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न विषय क्षेत्रों में अपने विभिन्न केन्द्रों द्वारा विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय के छात्रो, शोध छात्रों एवं शिक्षकों, गैर सरकारी संगठनों, शासकीय एवं अर्द्धशासकीय अधिकारियो, कृषकों आदि के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करती है।

1. शोध एवं विकास गतिविधियॉ

- **जैव प्रौद्योगिकी उपयोगिता केन्द्र** – केन्द्र द्वारा प्रदेश की आवश्यकताओं के अनुसार विकसित एवं स्थापित प्रौद्योगिकियों के चयन एवं प्रदर्शन में सहयोग प्रदान किया जाता है। केन्द्र द्वारा राष्ट्रीय स्तर की शोध संस्थाओं से उपलब्ध प्रौद्योगिकियों को प्राप्त करने में समन्वयन करना, प्रौद्योगिकी विकास एवं प्रदेश की आवश्यकताओं के अनुरूप उनका हस्तांतरण, उद्यमियों को व्यवसायिक रूप से लाभप्रद प्रौद्योगिकियों का हस्तांतरण, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पेटेन्ट की जा चुकी नवीन जैव प्रौद्योगिकियों को प्राप्त करने सहित प्रदेश के जनजाति एवं कमजोर वर्गो हेतु विकास कार्यक्रम, जैव प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा, जैव प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में शोध एवं इन क्षेत्रों में मानव संसाधन विकास हेतु प्रशिक्षण आदि कार्य किये जाते है।
- **जलकृषि उत्कृष्टता केन्द्र** – केन्द्र की स्थापना प्रदेश में जलकृषि आधारित गतिविधियों को प्रोत्साहन देने के लिये की गई है। केन्द्र का मुख्य उद्देश्य प्रदेश में जलकृषि के सभी क्षेत्रों को उच्च प्रौद्योगिकी प्रदान कर उत्पादकता को बढ़ावा देने का प्रयास करना है। जल कृषि के क्षेत्र मे मुख्य रूप से मीठा जल महाझींगा तथा एक्वेरियम की बहुरंगी सजावटी मछलियां एवं अन्य जलजीवों के उत्पादन क्षेत्र में उद्यमियों को प्रोत्साहन देना तथा मत्स्य शिक्षा के क्षेत्र में मानव संसाधन का विकास एवं कार्य आवश्यकता क्षेत्रों को चिन्हित करना है।
- **पेटेन्ट सूचना केन्द्र (पी.आई.सी.)** – प्रौद्योगिकी सूचना, पूर्वानुमान एवं मूल्यांकन परिषद (टाईफेक), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली के सहयोग से स्थापित इस केन्द्र द्वारा बौद्धिक संपदा अधिकार एवं ज्ञान प्रबंधन के क्षेत्र में कार्य किया जा रहा है। इस केन्द्र के निम्न उद्देश्य / कार्य है :
  - o लोगों में बौद्धिक संपदा अधिकारों के बारे में जागरूकता पैदा करना तथा विश्वविद्यालयों, उद्योगों, शासकीय विभागों तथा शोध एवं विकास संस्थानों में पेटेन्ट खोजो में मदद करना।
  - o नियमित आधार पर पेटेन्ट सूचनाओं का विश्लेषण करना तथा शोध एवं विकास संस्थानों को नये कार्यक्रम प्रस्तावित करना।
  - o खोजकर्ताओं को उनकी खोज को पेटेन्ट कराने हेतु आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करना।
- **केन्द्रीय प्रयोगशाला सुविधा (सी.एल.एफ.)** – प्रदेश में अत्याधुनिक उपकरणों द्वारा विश्लेषण सेवाये देने तथा प्रदेश के वैज्ञानिक समुदाय में इन्सट्रूमेन्टेशन वातावरण पैदा करने के उद्देश्य से इस केन्द्र की स्थापना की गई है।
  प्रयोगशाला गैस कोमेटोग्राफ, हाइपर फारमेन्स लिक्विड कोमेटोग्राफ, स्पेक्ट्रो फोटोमीटर, अल्ट्रा/हाई सेन्ट्रीफयूजेजेस, एटामिक एबजोरबिशन स्पेक्ट्रो फोटोमीटर, ड्रग मानिटरिंग उपकरण आदि अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित है। जिसके द्वारा जीवनतंत्र से संबंधित शोध परियोजनाओं को वैज्ञानिक आधार एवं सहयोग प्रदान किया जा सकता है। केन्द्र द्वारा इन्सट्रूमेन्टेशन के क्षेत्र में छात्रो/वैज्ञानिकों को प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है।
- **औषधीय एवं सुगंधित पौध संरक्षण केन्द्र** – औबेदुल्लागंज जिला रायसेन में स्थित इस केन्द्र में लगभग 200 प्रजातियों के औषधीय एवं सुगंधित पौधे देश/प्रदेश के विभिन्न स्थानों से एकत्रित कर कृषि आधारित प्रौद्योगिकी के विकास द्वारा इन पौधो का संरक्षण विकास एवं लोकव्यापीकरण कार्य किया जा रहा है। केन्द्र द्वारा इस हेतु प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है।
- **पुस्तकालय सह–प्रलेखन केन्द्र** – इस केन्द्र की स्थापना प्रदेश के छात्रों, शिक्षकों एवं शोधकर्त्ताओं को नवीन वैज्ञानिक सूचनायें/शोध साहित्य एवं आधुनिक पुस्तकालीन सेवायें प्रदान करने के उद्देश्य से की गई। केन्द्र द्वारा प्रत्येक वर्ष पाठको को शोध एवं उच्च शिक्षा के लिये उपयोगी लगभग 110 राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाऐं उपलब्ध करायी जाती है। इस केन्द्र में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित संदर्भ पुस्तको का भी महत्वपूर्ण संग्रह है। इसके साथ–साथ केन्द्र में पाठको को कम्प्यूटरीकृत पुस्तकालीन सेवायें जैसे – इन्टरनेट एवं आन लाईन सर्च सुविधा भी न्यूनतम शुल्क पर प्रदान की जाती है।
- **विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं औद्योगिक सूचना केन्द्र (सिस्टी)** – सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रदेश की वैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु इस केन्द्र की स्थापना की गई है। जिसके निम्न उद्देश्य है :
  - o विश्वपरिदृश्य में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में दिन प्रतिदिन हो रहे परिवर्तनो पर नजर रखना तथा प्रदेश के लिये आवश्यक प्रौद्योगिकी के विकास को बढ़ावा देना
  - o प्रौद्योगिकी मार्केट सर्वेक्षण एवं प्रौद्योगिकी स्तर पर आधारित विशिष्ट रिपोर्ट्स एवं अध्ययन खोजों का प्रचार–प्रसार तथा प्रदेश के विभिन्न विभागों, शैक्षणिक/शोध संस्थानो के मध्य सूचना प्रौद्योगिकी के आदान प्रदान में सहयोग एवं लिंकेज स्थापित करना
  - o रोजगारोन्नमुखी कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्रदान करना।

2. सुदूर संवेदन उपयोग केन्द्र

प्रदेश में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनो के वैज्ञानिकीय रूप से सर्वेक्षण एवं प्रबंधन के क्षेत्र में सुदूर संवेदन उपयोग केन्द्र द्वारा कार्य किया जा रहा है। केन्द्र के मुख्य उद्देश्य निम्नानुसार है।

- उपयोगकर्ता संगठनो की आवश्यकतानुसार विभिन्न उपयोगिता क्षेत्रो जैसे जल संसाधन, भौमिकी एवं खनिज संसाधन, कृषि एवं मृदा संसाधनो, वन संसाधन, शहरी एवं क्षेत्रीय योजना हेतु भूमि उपयोग एवं पर्यावरण आदि के थीमेटिक मानचित्र तैयार करना।
- जिला स्तर पर अन्तर्सबंध स्थापित करना।
- सुदूर संवेदन तकनीक द्वारा प्राकृतिक संसाधनो के सर्वेक्षण, थीमेटिक मानचित्रों के अध्ययन एवं इसके स्थल विशेष की जॉच (भूमि सत्यापन) आदि हेतु प्रशिक्षण प्रदान करना।
- उपयोगकर्ता विभिन्न संगठनो को सुदूर संवेदन डेटा, प्रयोगशाला सुविधा एवं प्रशिक्षण प्रदान करना।
- सुदूर संवेदन एवं इससे संबंधित क्षेत्रो में शोध कियाकलापो को बढ़ावा देना।
- शैक्षणिक संस्थाओं के संकाय सदस्यों एवं छात्रो को सुदूर संवेदन के क्षेत्र में वोकेशनल/इन्डस्ट्रियल प्रशिक्षण प्रदान करने को बढ़ावा देना।

3. विज्ञान लोकव्यापीकरण

प्रदेश के जनसामान्य, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाना, ग्रामीण/आदिवासी क्षेत्रों में विज्ञान के प्रति जागरूकता पैदा करना एवं मेधावी छात्रों को चिन्हित करना इस योजना का प्रमुख उद्देश्य है। उक्त योजना के तहत परिषद द्वारा मुख्यरूप से निम्नलिखित कार्यकम/योजनाऐं संचालित की जाती है। जैसे – लोकप्रिय विज्ञान वाचनालय, विज्ञान क्लब, युवा वैज्ञानिक कांग्रेस, राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस, राज्य स्तरीय विज्ञान पहेली प्रतियोगिता, अंतर्राष्ट्रीय गणित ओलम्पियाड, नवाचारी विज्ञान शिक्षक पुरस्कार, राष्ट्रीय विज्ञान सेमीनार, पश्चिम भारत विज्ञान मेला, विज्ञान उद्यानो/केन्द्रो का विकास, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस, खगोल विज्ञान से संबंधित कार्यक्रम तथा प्रशिक्षण कार्यकम/कार्यशालाऐं आदि।

उच्चस्तर के शोध कार्यो को मान्यता प्रदान करने हेतु राष्ट्रीय/प्रदेश स्तर के पुरस्कार भी परिषद द्वारा प्रदान किये जाते है।

4. महिलाओं, अनुसूचित जाति, जनजाति के गरीबी उन्मूलन हेतु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी उपयोग

- **विज्ञान एवं समाज** – समाज में महिलाओं, कमजोर वर्गो, अनुसूचित जाति, जनजाति एवं ग्रामीण वर्गो के लिये विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के निवेश द्वारा उनके सामाजिक एवं आर्थिक जीवन स्तर का उन्नयन करना तथा इन्हें आय के अधिक अवसर प्रदान करने सहित उनके जीवन की नीरसता एवं कठोरता को आसान करते हुये उनके जीवन स्तर में उन्हें बेहतर स्वास्थ्य, चिकित्सा सेवा, पोषण, स्वच्छता एवं शुद्ध पर्यावरण सुविधा प्रदान करना इस योजना का मुख्य उद्देश्य है। समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ–साथ विज्ञान शिक्षा को प्रोत्साहित करना भी इस योजना में निहित है।
- **ग्रामीण विकास एवं प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन केन्द्र (प्रसंग)** – प्रसंग परिषद द्वारा संचालित ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य करने वाली अव्यवसायिक एक स्वायत्त संस्था है। संस्था द्वारा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के निवेश द्वारा ग्रामीण विकास से संदर्भित गतिविधियों का प्रशिक्षण सहित संचालन किया जाता है।

5. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रोत्साहन योजना

परिषद द्वारा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न विषय क्षेत्रों में शोध एवं विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से निम्न कार्यक्रमों को प्रायोजित किया जाता है।

- लघु शोध परियोजना, यात्रा अनुदान, युवा वैज्ञानिको हेतु प्रशिक्षण, सेमिनार/सिम्पोजिया, वर्कशाप एवं सम्मेलन।

6. समन्वयक प्रकोष्ठ

परिषद द्वारा प्रदेश के प्रत्येक विश्वविद्यालयों एवं चिकित्सा विश्वविद्यालयो में स्थापित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठो के अंतर्गत संबंधित संस्थानों से एक–एक परिषद समन्वयक मनोनीत किया गया है। जो परिषद के उद्देश्यो के अनुरूप परिषद की गतिविधियों के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ अपनी संस्था एवं परिषद के मध्य समन्वयन कार्य भी करते है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें अथवा लिखे –

प्रो. एच.पी. गर्ग
प्रमुख सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (म.प्र. शासन),
वैज्ञानिक सलाहकार (म.प्र. शासन) एवं महानिदेशक,
मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद
विज्ञान भवन, साइंस हिल्स, नेहरू नगर,
भोपाल – 462003
((0755) 2671800, 2671600(कार्य.), 2431400(नि), फैक्स:(0755)2671600
ई–मेल : hpgarg01@rediffmail.com, dgmapcost@hotmail.com, mpcost @mp.nic.in

या

प्रो. यू. एस. विजयवर्गीय,
कार्यकारी संचालक,
मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद
विज्ञान भवन, साइंस हिल्स, नेहरू नगर,
भोपाल – 462003
((0755) 2671900(कार्य.), 2568107(नि), फैक्स : (0755) 2671609,

और अधिक जानकारी हेतु कृपया वेबसाइट देखे – www.mp.nic.in/mapcost

M.P. COUNCIL OF SCIENCE & TECHNOLOGY

परिषद् गतिविधियाँ

मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् (मेपकास्ट)